माननीय इस्पात मंत्री जी की अध्यक्षता में इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 11.09.2017 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई दूसरी बैठक का कार्यवृत्त

इस्पात मंत्रालय की पुनर्गठित हिन्दी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक दिनांक 11.09.2017 को अशोक होटल, नई दिल्ली में **माननीय इस्पात मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह की अध्यक्षता में** सम्पन्न हुई। बैठक में भाग लेने वाले माननीय सदस्यों की सूची **'अनुबंध'** के रूप में संलग्न है।

बैठक के आरम्भ में सहायक निदेशक (रा.भा.) ने मंत्रालय की तरफ से सबका स्वागत किया और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) के महाप्रबंधक से विधिवत कार्यक्रम प्रारम्भ करने का अनुरोध किया। तत्पश्चात् उन्होंने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी विश्व भाषा बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है। हमें अपने शासकीय और दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। इसके बाद इस्पात सचिव महोदया ने माननीय इस्पात मंत्री जी और इस्पात राज्य मंत्री जी का स्वागत किया और उन्हें महाकवि दिनकर जी की कृति **"संस्कृति के चार अध्याय"** भेंट की। इसके बाद सभी उपक्रम प्रमुखों ने शॉल और पुस्तक भेंट करते हुए समिति के सभी माननीय सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात् माननीय इस्पात राज्य मंत्री जी ने सभा को संबोधित किया।

माननीय इस्पात राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय): श्री साय ने औपचारिक स्वागत और अभिनंदन करते हुए कहा कि समिति की बैठक में आकर वे बहुत उत्साहित हैं। श्री साय ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए संयुक्त सचिव (राजभाषा) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन पर भी प्रसन्नता जाहिर की। मंत्रालय अपने अधीन होने वाले कार्यों में हिन्दी को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने बताया कि आरआईएनएल, एनएमडीसी, एफएसएनएल, एचएससीएल 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उपक्रमों द्वारा **पखवाड़ा** आयोजन व विविध प्रोत्साहन योजनाओं के द्वारा हिन्दी के प्रति सकारात्मक माहौल बनाया जा सकता है।

माननीय इस्पात मंत्री (चौधरी बीरेंद्र सिंह): माननीय इस्पात मंत्री ने हिन्दी के सरल स्वरूप पर बल देते हुए कहा कि - **"हिन्दी सिर्फ राजभाषा ही नहीं बल्कि यह हमारे बोलचाल की भाषा भी है।" हिन्दी के उत्थान के लिए उन्होंने हिन्दी के सरल स्वरूप यानि "हिन्दुस्तानी" को अपनाने पर विशेष बल दिया। हिन्दी के उत्थान के लिए और उसे देशव्यापी बनाने में हिन्दी फिल्मों के विशेष योगदान के साथ ही हिन्दी क्रिकेट कमेंट्री के योगदान को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज के युग में टेलीविजन भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक बहुत बड़ा साधन बन गया है। उन्होंने कहा कि हिन्दी का सरलीकरण करना है तो उसका हिन्दुस्तानीकरण करना होगा क्योंकि भाषा ही संस्कृति और खान-पान जैसे रीति-रिवाजों की संवाहक होती है।** हम दूसरी भाषाओं के शब्द ले सकते हैं और उनको हिन्दी के साथ जोड़कर उसे और व्यापक रूप दे सकते हैं। जिस तरफ हम चलेंगे, हमारी संस्कृति भी उसी तरफ जाएगी। हमारी हिन्दी सलाहकार समिति व्यापक रूप से किरदार निभा सकती है। **यदि भाषा सरल होगी तो सर्वगम्य होगी। इसके अतिरिक्त मूल रूप से हिन्दी में शोध कार्य किए जाने पर भी उन्होंने बल देते हुए कहा कि - "अगर हम शोध कार्य अपनी भाषा में करें तो हमारा शोध विश्व में अग्रणी हो सकता है"।** अंत में बैठक में आए सभी अतिथियों का धन्यवाद और अभिनन्दन करते हुए उन्होंने अपने सम्बोधन को विराम दिया।

सदस्य सचिव: श्री ता. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव ने **पॉवर पॉइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से** इस्पात मंत्रालय में हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति, संगणक पर हिन्दी कार्य, हिन्दी प्रशिक्षण मिसिलों पर

हिन्दी में टिप्पण/पारूपण आदि की स्थिति का आंकड़ों के माध्यम से विस्तृत विवरण दिया। तदुपरान्त क्रमश: **श्री पी.के. सिंह** (अध्यक्ष, भारतीय इस्पात निगम लिमिटेड), **श्री पी. मधुसूदन,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड), **श्री राजीब भट्टाचार्य,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड), **श्री अतुल भट्ट,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (मेटलर्जिकल एण्ड इंजीनियरिंग कंसलटेंट्स लिमिटेड), **श्री एम.पी. चौधरी,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (मैंगनीज़ ओर इंडिया लिमिटेड), **श्री संदीप तुला,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (राष्ट्रीय खनिज विकास निगम), **श्री एम.वी. सुब्बाराव** , अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (कुद्रेमुख आयरन-ओर कंपनी लिमिटेड), **श्री बी.बी. सिंह,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (मेटल्स एण्ड मिनरल्स ट्रेडिंग कॉरपोरेशन) और **श्री एम. भादूरी,** अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड) ने अपने-अपने उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुतिकरण के माध्यम से दिया।

श्री लाल सिंह वड़ोदिया (संसद सदस्य) ने माननीय प्रधानमंत्री के **"संकल्प से सिद्धि"** कार्यक्रम का जिक्र करते हुए कहा कि जैसे 1942 में गांधी जी ने पूरे भारत में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' (Quit India Movement) चलाया था और उसके 5 वर्ष बाद 1947 में आजादी मिली थी। उसी तरह हम **हिन्दी में शत-प्रतिशत काम करने का संकल्प 2017 में लें और 2022 में सिद्धि प्राप्त करने का लक्ष्य रखें।**

(कार्रवाई: सभी उपक्रम)

श्री नरेश गुजराल (संसद सदस्य): श्री गुजराल ने माननीय इस्पात मंत्री के "हिन्दुस्तानी" जिसमें ब्रज भाषा, उर्दू से लेकर फारसी, बंगाली, पंजाबी आदि का मिश्रण है, को अपनाने का पुरजोर समर्थन किया। **श्री गुजराल ने भाषा को थोपने की बजाए उसका स्वरूप ऐसा बनाने पर जोर दिया जिसे स्वेच्छा से अपनाया जाए।** इसके साथ ही उन्होंने अंग्रेजी में आए पत्रों का हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी उत्तर दिए जाने का सुझाव रखा। उन्होंने कहा कि जो भाषा हम रोज प्रयोग करते हैं, उसका हमें कार्यालय में प्रयोग करना चाहिए और **हिन्दी की जगह हम "हिन्दुस्तानी" की बात करनी चाहिए।**

(कार्रवाई: मंत्रालय तथा सभी उपक्रम)

श्रीमती क्रान्ति कनाटे (सदस्य) ने इस्पात मंत्रालय का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस्पात मंत्रालय व उपक्रमों द्वारा बहुत अच्छा काम हिन्दी में हो रहा है और 'ग' क्षेत्र में हो रहे हिन्दी कार्यान्वयन के कार्य की सराहना की। श्रीमती कनाटे ने **अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को हिन्दी में यथावत स्थान देने का आग्रह किया न कि दुराग्रहपूर्ण ढंग से अनूदित शब्दों को।** उन्होंने इस्पात मंत्रालय द्वारा जो भी कार्य हिन्दी में किए जा रहे हैं उसका धन्यवाद किया और अंत में उन्होंने **पुष्पगुच्छ** की जगह **पुस्तकगुच्छ** देने की एक अच्छी शुरूआत के लिए भी प्रसन्नता व आभार व्यक्त किया।

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री श्रीराम परिहार (सदस्य) ने शुरूआत में सभी का अभिवादन किया और पूर्व बैठक में दिए गए सुझावों के अनुपालान पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि - **"हिन्दी इस राष्ट्र की मिट्टी से निकली हुई भाषा है और उसने स्वतंत्रता आंदोलन में सम्पूर्ण राष्ट्र को खड़ा करने का काम किया"।** उन्होंने अंग्रेजी के शब्दों के स्थान पर **हिन्दी के बोलचाल के शब्दों के प्रयोग का सुझाव दिया,** जैसे स्ट्रीट लाइट के स्थान पर पथदीप, शील्ड या ट्रॉफी को मंजूषा या वैजयंती से प्रतिस्थापित करने और प्रतीकात्मक शब्दों यथा - रोडमैप के लिए नक्शा-निर्माण जैसे शब्दों के प्रयोग का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि इसके लिए यदि सदस्यों की मदद अपेक्षित हो तो माननीय सदस्यों के ज्ञान को निश्चित रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उन्होंने हिन्दी में अच्छे काम की प्रशंसा की और सुझाव दिया कि **मंत्रालय और उपक्रमों द्वारा**

प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाओं को विद्यालयों में भेजे जाने की कोई व्यवस्था होनी चाहिए ताकि उनको पता चले कि हिन्दी में इतनी अच्छी पत्रिकाएं निकलती हैं। इसके साथ ही आम जनता और 11वीं-12वीं कक्षा के विद्यार्थियों तक हिन्दी की सकारात्मक छवि पहुंचाने का कार्य भी करना चाहिए ताकि उनमें यह संदेश जाए कि इतने बड़े संस्थानों में केवल अंग्रेजी पढ़ने वाला ही नहीं वरन् हिन्दी माध्यम से पढ़कर भी उच्च पदों पर नौकरी पाई जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि इस्पात उत्पादों पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में सूचनाएं छापकर हिन्दी को घर-घर पहुंचाया जा सकता है। संयंत्रों के नाम उनके पहले अक्षरों को मिलाकर हिन्दी में करने का सुझाव भी उन्होंने दिया।

(कार्रवाई: मंत्रालय तथा सभी उपक्रम)

श्री वी. पाटिल (सदस्य) ने माननीय इस्पात मंत्री जी के इस विचार का पूर्ण समर्थन किया कि हिन्दी के प्रचार में हिन्दी सिनेमा, हिन्दी क्रिकेट कमेंट्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि - **"वैसे तो हम आजाद हो गए हैं विदेशी शासन से। लेकिन चीर हरण अब भी जारी है घर के दु:शासन से"**। घर की भाषा के प्रति भी उतना ही सम्मान होना चाहिए। श्री पाटिल ने यह भी सुझाव दिया कि **बैठक की कार्यसूची बैठक के कम से कम 15 दिन पहले सदस्यों को उपलब्ध करवाई जाए ताकि सदस्यगण उसका अध्ययन करके बेहतर सुझाव दे सकें। इसके अलावा हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक साल में अधिकतम 3 बार और कम से कम 2 बार आयोजित करवाने तथा हिन्दी को हृदय से अपनाए जाने की इच्छाशक्ति जागृत किए जाने की जरूरत पर भी जोर दिया।**

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री त्रिभुवन नाथ शुक्ल (सदस्य) ने अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि - "**हिन्दी चाहे दिल्ली में बोली जाए या विशाखापट्टनम में या अमेरिका में, उसका स्वरूप एक होना चाहिए"।** उन्होंने कहा कि यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम **शुद्ध वर्तनी वाली हिन्दी को व्यवहार में लाएं।** उनका कहना था **शोध कार्य अपनी भाषा में होगा तो वह बहुत अच्छा होगा।** भोपाल में स्थापित किए गए हिन्दी विश्वविद्यालय का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि इस विश्वविद्यालय में सभी विषयों की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से होती है तो शोध कार्य हिन्दी में क्यों नहीं हो सकता? उन्होंने जापान आदि देशों का उदाहरण दिया जहां शोध कार्य उनकी अपनी भाषा में हो रहा है। उन्होंने कहा कि विज्ञान हो, तकनीक हो या चिकित्सा हो - किसी भी विषय को ले सकते हैं। **हम अपनी भाषा में शोध कर सकते हैं, आवश्यकता है तो इच्छाशक्ति की।**

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री विकास दवे (सदस्य): श्री दवे ने फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड के 'ख' क्षेत्र में हिन्दी पत्राचार शून्य दिखाए जाने और साथ ही मॉयल के 'ग' क्षेत्र में भी शून्य पत्राचार की स्थिति पर असंतोष जाहिर करते हुए कहा यदि बैठक का निमंत्रण पत्र ही हिन्दी में भेज देते तो शून्य की स्थिति नहीं रहती। उन्होंने 'ग' क्षेत्र के उपक्रमों के हिन्दी कार्यान्वयन की सराहना की तथा लक्ष्य कम से कम 50 प्रतिशत रखने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि **भारत के स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था कि - "लक्ष्य हमेशा बड़ा होना चाहिए" -** इसलिए 50 प्रतिशत का लक्ष्य रखेंगे तो लक्ष्य बहुत आगे बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त **उन्होंने संयंत्रों के नाम भेल की तर्ज पर हिन्दी में, संक्षिप्तिकरण के जरिए बनाने, उपक्रमों के लोगो (प्रतीक चिन्ह) में हिन्दी को और अधिक आकर्षक बनाने, प्रस्तुतिकरण में चित्रात्मक वृत्तों (चार्ट आदि) को प्रयोग करने, हिन्दी में ट्वीट की सुविधा हो तथा संगोष्ठियों में सदस्यों को बुलाने जैसे बहुमूल्य सुझाव दिए।**

(कार्रवाई: उपक्रम)

श्री पुनीत प्रधान (सदस्य): श्री पुनीत प्रधान ने अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि वे ओडिशा से हैं और देश के प्रथम जनजातीय विश्वविद्यालय, ओडिशा से सम्बद्ध हैं। उन्होंने आगे कहा कि चीन, जापान और रूस आदि देशों में देखा गया है कि वहां के लोग भाषा को लेकर काफी गम्भीर हैं और भाषा को लेकर कोई समझौता नहीं करते। उनका कहना था कि - **"हम राष्ट्रीय भाषा का जितना अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे, हम लोग उतने ही उन्नत होंगे"।** उन्होंने **बैठकों का आयोजन भी दक्षिण के राज्यों यथा - तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल आदि में करवाने का सुझाव दिया** ताकि इन क्षेत्रों में हिन्दी कार्यान्वयन पर अनुकूल प्रभाव पड़े। संगोष्ठियों के आयोजन का भी सुझाव दिया।

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री प्रभात वर्मा (सदस्य): श्री वर्मा ने कामिल बुल्के के कथन - **"संस्कृत महारानी, हिन्दी बहुरानी और अंग्रेजी नौकरानी"** का उल्लेख करते हुए हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया। इसके अतिरिक्त रजिस्टरों, सेवा पंजिकाओं आदि में **शत-प्रतिशत हिन्दी में प्रविष्टियां** करने, कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने की सुविधा देने, 'क' क्षेत्र में 100 प्रतिशत **हिन्दी में पत्र व्यवहार** किए जाने, **वेबसाइट को द्वविभाषी** किए जाने, **अनुवाद पर निर्भरता के बजाए मूल रूप में हिन्दी में टिप्पण/प्रारूपण करने का सुझाव दिया।**

(कार्रवाई: मंत्रालय तथा सभी उपक्रम)

श्री चन्द्रकांत जोशी (सदस्य): श्री चन्द्रकांत जोशी जी ने कहा कि **वेबसाइट पर तथ्यों को हिन्दी में पीडीएफ के साथ टेक्स्ट प्रारूप में भी डालें** ताकि सर्चइंजन में हिन्दी तथ्यों को खोजने में आसानी हो। इसके अतिरिक्त **हिन्दी गतिविधियों को दर्शाने के लिए वेबसाइट पर एक हिन्दी ब्लॉग की सुविधा देने** (जिसमें कविता, कहानियां - जो भी कार्मिक लिखना चाहें) को डाले जाने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री देशपाल सिंह राठौर (विशेष आमंत्रित सदस्य): श्री राठौर ने कहा कि **वेबसाइट सर्वप्रथम हिन्दी में खुलनी चाहिए।** जो तकनीक आप अंग्रेजी में लगाते हैं, वही आप हिन्दी में लगाएं ताकि वेबसाइट पहले हिन्दी में ही खुले। इसी संदर्भ में उन्होंने मेकॉन की वेबसाइट की प्रशंसा की। उन्होंने भाषा के सरलीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि **जो शब्द हिन्दी के उपलब्ध हैं, उनकी जानबूझकर अनदेखी न की जाए।** हिन्दी अनुपालन की स्थिति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 'ग' क्षेत्र में हिन्दी के अनुपालन की स्थिति हिन्दी क्षेत्र से अधिक है। संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन के 9वें खण्ड के संदर्भ में महामहिम राष्ट्रपति जी की सिफारिशों में अगस्त, 2017 में कहा गया है कि कार्यालयों में अंग्रेजी को ही बढ़ावा दिया जा रहा है और वहां अंग्रेजी का ही माहौल है। उसे बदलने की जरूरत है तभी हिन्दी का उत्थान हो सकता है। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम हिन्दी का माहौल बनाएं। इसके अतिरिक्त निजी स्वयंसेवी संस्थाएं, जो राजभाषा विभाग के गठन के पहले से हिन्दी के लिए कार्य कर रही हैं, उनमें कार्मिकों को प्रशिक्षण के लिए नामित करने के प्रति उदारतापूर्ण रवैया अपनाए जाने का मत भी श्री राठौर ने रखा।

(कार्रवाई: मंत्रालय)

श्री गोपाल सिंह पहाड़िया (विशेष आमंत्रित सदस्य) ने कहा कि हर मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार समिति होती है जो हिन्दी के कार्यान्वयन को बेहतर करने के लिए काम करती है अत: हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि **कार्यालय के कार्मिक ग्रीन पेपर पर हिन्दी में टिप्पण का कार्य प्राथमिकता के आधार पर करें।** दूसरा तथ्य यह है कि हिन्दी सलाहकार समिति का गठन तीन वर्ष के लिए होता है। **सदस्य केवल**

सुझाव देते हैं, सुझाव पर क्या अमल हुआ इसकी स्थिति जानने को मिले इसके पहले ही समिति के पुनर्गठन की स्थिति आ जाती है। अत: निर्णयों और सुझावों का अनुपालन नहीं हो पाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सुझाव दिया कि इस प्रकार की **बैठकें/संगोष्ठियां हमें जनजातीय क्षेत्रो/'ग' क्षेत्र में करनी चाहिएं और सभी सदस्यों को किसी-न-किसी क्षेत्र से जोड़ दें।** उनकी इस बात का अन्य कई सदस्यों ने समर्थन किया। उन्होंने यह भी कहा कि **प्रत्येक उपक्रम/कार्यालय में हिन्दी अनुपालन को देखने के लिए किसी सदस्य को उसके साथ जोड़ दिया जाए ताकि अिधकारियों की जिम्मेदारी बने और वो सदस्य के प्रति जवाबदेह हों।** इससे हिन्दी अनुपालन की स्थिति और बेहतर होगी।

(कार्रवाई: मंत्रालय)

सदस्य सचिव (श्री ता. श्रीनिवास) ने समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों पर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया। भविष्य में संगोष्ठियों में सदस्यों को सुविधानुसार शामिल करने का आश्वासन दिया। बैठक की कार्यसूची की सॉफ्ट कॉपी जल्द मिले - इसकी भी व्यवस्था की जाएगी। अंत में उन्होंने माननीय इस्पात मंत्री जी से उपक्रमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों को **"इस्पात राजभाषा सम्मान"** और **"प्रशस्ति-पत्र"** प्रदान करने का अनुरोध किया। तत्पश्चात् माननीय इस्पात मंत्री जी ने निम्नानुसार पुरस्कार प्रदान किए:-

क्रम सं.	**इस्पात राजभाषा सम्मान**	**उपक्रम का नाम**
1.	**"इस्पात राजभाषा सम्मान" (प्रथम पुरस्कार)**	राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टनम
2.	**"इस्पात राजभाषा सम्मान" (द्वितीय पुरस्कार)**	फेरो स्क्रैप निगम लि., भिलाई
3.	**"इस्पात राजभाषा सम्मान" (तृतीय पुरस्कार)**	राष्ट्रीय खनिज विकास निगम, हैदराबाद
4.	**"इस्पात राजभाषा प्रोत्साहन सम्मान" ('ग' क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु)**	हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड, कोलकाता
5.	**"इस्पात राजभाषा कार्यान्वयन सम्मान" (उत्कृष्ट हिन्दी कार्य हेतु - संबंधित हिन्दी अधिकारी को)**	राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टनम के श्री ललन कुमार, राजभाषा अधिकारी को।

संयुक्त निदेशक (राजभाषा): ने सदस्यों को धन्यवाद देते हुए सदस्यों द्वारा सुझाए गए विचारों के अनुपालन का अश्वासन दिया तथा हिन्दी कार्मिकों तथा सम्बद्ध उपक्रमों को धन्यवाद दिया तथा आयोजन में शामिल आरआईएनएल, एनएमडीसी तथा मॉयल के प्रतिनिधियों का विशेष रूप से धन्यवाद किया। सचिव (इस्पात) महोदया का विशेष धन्यवाद किया कि उनके मार्गदर्शन में यह सफल आयोजन हो पाया। अंत में उपक्रमों द्वारा प्रकाशित कुछ पत्रिकाओं का माननीय इस्पात राज्यमंत्री व सचिव (इस्पात) द्वारा विमोचन किए जाने के साथ बैठक का समापन हुआ।

******

अनुबंध

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 11.09.2017 को नई दिल्ली में हुई बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची

	सर्वश्री/सुश्री	
1.	चौधरी बीरेन्द्र सिंह, इस्पात मंत्री	अध्यक्ष
2.	विष्णु देव साय, इस्पात राज्य मंत्री	उप-अध्यक्ष
3.	लाल सिंह बड़ोदिया, संसद सदस्य	गैर सरकारी सदस्य
4.	नरेश गुजराल, संसद सदस्य	गैर सरकारी सदस्य
5.	क्रांति कनाटे	गैर सरकारी सदस्य
6.	डॉ. श्रीराम परिहार	गैर सरकारी सदस्य
7.	डॉ. बंडोपंत पाटील	गैर सरकारी सदस्य
8.	प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	गैर सरकारी सदस्य
9.	डॉ. विकास दवे	गैर सरकारी सदस्य
10.	पुनीत प्रधान	गैर सरकारी सदस्य
11.	प्रभात वर्मा	गैर सरकारी सदस्य
12.	चन्द्रकांत जोशी	गैर सरकारी सदस्य
13.	देशपाल सिंह राठौर	विशेष आमंत्रित
14.	गोपाल सिंह पहाड़िया	विशेष आमंत्रित

इस्पात मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग के अधिकारीगण

	सर्वश्री/सुश्री	
1.	डॉ. (श्रीमती) अरूणा शर्मा, सचिव (इस्पात)	सदस्य
2.	सरस्वती प्रसाद, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार	सदस्य
3.	टी. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव	सदस्य-सचिव
4.	सुनील बडथ्वाल, संयुक्त सचिव	उपस्थित
5.	उर्विला खाती, संयुक्त सचिव	उपस्थित
6.	पलि कुंडु, उप महानिदेशक	उपस्थित
7.	प्रमोदिता सतीश, आर्थिक सलाहकार	उपस्थित
8.	महावीर प्रसाद, निदेशक,	उपस्थित
9.	अनुपम प्रकाश, निदेशक	उपस्थित
10.	सुभाष भट्टाचार्या, उप-सचिव	उपस्थित
11.	नरेश वाधवा, उप-सचिव	उपस्थित
12.	अरूण कुमार कैलू, उप सचिव	उपस्थित
13.	आनन्द कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित
14.	आस्था जैन, सहा-निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के अध्यक्ष/अधिकारीगण

सर्वश्री/सुश्री		
1.	पी.के. सिंह, अध्यक्ष, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	सदस्य
2.	पी. मधुसूदन, अध्यक्ष एवं सह-प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि.	सदस्य
3.	एम.पी. चौधरी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मॉयल लिमिटेड	सदस्य
4.	एम. भादुड़ी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लि.	सदस्य
5.	बी.बी. सिंह, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, एमएसटीसी लिमिटेड	सदस्य
6.	एम.वी. सुब्बाराव, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, के.आई.ओ.सी.एल.	सदस्य
7.	अतुल भट्ट, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मेकॉन लिमिटेड	सदस्य
8.	राजीव भट्टाचार्य, प्रबंध निदेशक, एफ.एस.एन.एल.	सदस्य
9.	संदीप तुला, निदेशक, एन.एम.डी.सी. लिमिटेड	प्रतिनिधि
10.	जी.बी.एस. प्रसाद, निदेशक (कार्मिक) राष्ट्रीय इस्पात निगम लि.	उपस्थित
11.	एम.पी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, एम.एस.टी सी. लि.	उपस्थित
12.	एस राजेंद्र, महाप्रबंधक, के.आई.ओ.सी.एल.	प्रतिनिधि
13.	ललन कुमार, उप-महाप्रबंधक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि.	प्रतिनिधि
14.	छगन लाल नागवंशी, राजभाषा अधिकारी, एफ.एस.एन.एल.	उपस्थित
15.	रूद्रनाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक, एनएमडीसी लि.	उपस्थित
16.	फागु सिंह, राजभाषा प्रभारी अधिकारी, एच.एस.सी.एल. लिमिटेड	उपस्थित
17.	डी.पी. डंगवाल, सहा. महाप्रबंधक, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	उपस्थित
18.	पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी, मॉयल लिमिटेड	उपस्थित
19.	डॉ. रमापति तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा), मेकॉन लिमिटेड	उपस्थित